ISSN: 0973-0583

नई कविता : नए भावबोध

डॉ0 मुकेश कुमार
सहायक प्राध्यापक, हिन्दी विभाग, जी. जे. कॉलेज, रामबाग, बिहटा, पटना

शोध-सार:

1954 में जगदीश गुप्त की पत्रिका 'नयी कविता' के प्रकाशन से नई कविता आंदोलन का प्रारंभ हुआ । नई कविता में हर दर्शन और विचारधारा से जुड़े रचनाकार सक्रिय हुए जिसके परिणामस्वरूप नई कविता का दायरा बहुत व्यापक हो गया। यहाँ अज्ञेय अस्तित्ववादी हैं तो मुक्तिबोध प्रगतिवादी, धर्मवीर भारती व्यक्तिवादी हैं तो सर्वेश्वर दयाल सक्सेना तथा रघुवीर सहाय समाजवादी। भवानी प्रसाद मिश्र गाँधीवादी हैं। नई कविता में वाद विरोध के साथ-साथ कथ्य की व्यापकता देखने को मिलती है। कथ्य की व्यापकता इसलिए कि नई कविता में मानव के समग्र अनुभवखंडों को समायोजित किया गया है। छायावादी कविता का काव्यनायक महामानव है तो प्रगतिवादी कविता का काव्यनायक शोषित -उत्पीड़ित मानव है, लेकिन नई कविता का काव्यनायक लघुमानव है। नई कविता क्षणवाद में विश्वास व्यक्त करती है। क्षणवाद का मूल उत्स अस्तित्ववादी दर्शन और मनोविश्लेषणवाद है। नई कविता में क्षणवाद की परिणति दो रूपों में होती है-जीवनपरक आस्था के रूप में तथा दूसरे भोगवाद के रूप में। नई कविता आधुनिक भावबोध की कविता है। द्वन्द और तनाव आधुनिक भावबोध का प्रमुख तत्व है। नई कविता में द्वन्द्व और तनाव का कारण कहीं आत्मग्रसतता है,तो कहीं समाजग्रस्तता है। कहीं अंतर्मुखता है तो कहीं बहिर्मुखता। मुक्तिबोध में द्वन्द्व और तनाव व्यक्ति से समाज तक फैलता है तथा समाज से व्यक्ति तक सिकुड़ता है। रघुवीर सहाय को लोकतान्त्रिक व्यवस्था के ढहते हुए लोकतान्त्रिक मूल्यों के बीच भी लगता है कि उनकी आवाज कभी-न-कभी अवश्य सुनी जाएगी। प्रयोगवादी कविता अनुभूति और विचार के संश्लेषण को लेकर सामने आती है जबकि नई कविता उन अनुभूतियों को चित्रित करती है जो उनकी भोगी और जानी हुई है। द्वितीय विश्वयुद्ध के पश्चात मूल्यहीनता नवीन मूल्य के रूप में सामने आती है। मूल्यहीनता को नई कविता ने विभिन्न रूपों में अभिव्यक्त किया। नई कविता पर छायावादी दर्शन का भी प्रभाव है और इस प्रभाव को अभिव्यक्ति मिलती है पीड़ावाद के जरिए। विसंगतिबोध नई कविता की एक महत्वपूर्ण विशेषता है जिसका आगमन नई कविता में आस्तित्ववादी चिंतन के प्रभाव होता है। इस विसंगतिबोध की पृष्ठभूमि में मौजूद है द्वितीय विश्व युद्ध की परिस्थतियाँ और आजाद भारत का परिदृश्य। नई कविता, नए शब्द विधान, नवीन प्रतीक योजना तथा नए उपमान के साथ उपस्थित होती हैं।

शब्द कुँजी : अस्तित्ववाद, लघुमानववाद, क्षणवाद, मूल्यहीनता,पीड़ावाद,भोगवाद, आत्मचेतस,विडंबना, सपाटबयानी

परिचय:

आजादी बाद बदली हुई परिस्थितियों के अनुरूप ही नई कविता नए भावबोध के साथ उपस्थित होती है। इस कविता के लिए जीवन का कोई भी पक्ष अकव्योचित नहीं है। कथ्य की व्यापकता की शायद यही वजह भी है। रघुवीर सहाय ने लिखा- हम तो सर का सर लेंगे, जीवन कम से कम वाली बात न हमसे कहिए।"कथ्य के प्रति नई कविता का जो आग्रह दिखता है वह स्वानुभूति का है। नई कविता का कवि भोगे हुए यथार्थ को ही अभिव्यंजित करता है। उनकी आस्था तो जीवन के प्रति है लेकिन लालसा जीवन को भोगने की है। यही कारण है की नई कविता का कवि क्षणजीवी बन जाता है। हर क्षण का अनुभव अलग-अलग होता है लेकिन नई कविता का कवि हर क्षण को ही भोगना चाहता है,इसलिए वह कुछ तनाव में भी रहता है। नई कविता आत्मसजग व्यक्ति की प्रतिक्रिया है। तर्कहीन परंपरावादी चीजें उसे पसंद नहीं। उसे लुभाती है केवल तार्किकता तथा आधुनिकता। वैज्ञानिक सोच की वजह से हर प्रकार की विचारधारा इसमें पनाह पाती है। हाशिये पर रही हर चीजें प्रमुखता पाती हैं। कॉमेडी तथा ट्रैजडी सभी का चित्रण संभव हो पाता है। स्त्री जीवन की विडंबना तथा स्त्री -पुरुष संबंधों में आए बदलाव का चित्रण संभव हो पाता है। आधुनिक भावबोध से युक्त यह कविता नवीन सामाजिक यथार्थ को अभिव्यक्त करता है। .. पर नई कविता में समग्र मनुष्य की बात ही नहीं कही गयी, वरन मनुष्य के समग्र अनुभव-खंडों को संयोजित किया गया है। यह स्मरणीय है कि नई कविता युग का साहित्य पहली बार स्वाधीन और प्रजातान्त्रिक देश

में रचा गया है। यहाँ केवल वीर और श्रृंगार जैसे रसों में जीवन सीमित नहीं रह गया, वरन छोटे-से-छोटे समझे जाने वाले अनुभव- कणों की प्रासंगिकता पहचानी गई है। संस्कृत साहित्य में धीरोदात्त, विशिष्ट व्यक्तित्व रचना के केंद्र में था; महाकाव्य का नायक होने के लिए यह बुनियादी शर्त थी। उन्नसवीं -बीसवीं शदी के भारतीय पुनर्जागरण ने सामान्य और तिरस्कृत चरित्रों को विशिष्टता दी-मेघनाद, कैकेयी, उर्मिला, एकलव्य और कर्ण को इस प्रक्रिया में महत्व मिला। आधुनिक साहित्य तक आते-आते चक्र पूरा घूम जाता है। अब साधारण चरित्र के वैशिष्ट्य को नहीं ,उसके साधारण जीवन को ही रेखांकित करने का प्रयत्न दिखता है। ... मुक्तिबोध की पंक्तियाँ हैं-

जीवन में जो कुछ है,जो भी है
सहर्ष स्वीकार है;
इसलिए कि जो कुछ भी मेरा है
वह तुम्हें प्यारा है।
गर्वीली गरीबी यह, ये गंभीर अनुभव सब,
यह विचार वैभव सब;
दृढ़ता यह, भीतर की सरिता यह अभिनव सब
मौलिक है,मौलिक है ;
इसलिए कि पल-पल में
जो कुछ भी जाग्रत है, अपलक है-
संवेदन तुम्हारा है !! [1]

नई कविता नए परिवेश की कविता है। परिवेश ही व्यक्ति को निर्मित करता है। नए परिवेश में बदली हुई परिस्थितियों के अनुरूप अब महिलाएँ भी शिक्षा प्राप्त कर आर्थिक स्वालंबन को प्राप्त कर रही हैं। पंचवर्षीय योजनातथा आर्थिक विकास की वजह से समाज का मॉडल भी बदला है। औद्योगीकरण तथा महानगरीकरण की प्रक्रिया में समाज की संरचना में परिवर्तन देखा गया। स्त्री -पुरुष संबंधों में आए बदलाव से सामाजिक परिवर्तन हुआ। पति-पत्नी के बीच तीसरे की उपस्थिति से यौन नैतिकता ही समाप्त हो गयी। कुंठा, तनाव,संत्रास तथा निरर्थकता-बोध नई कविता के भावबोध के केंद्र में है। जीवन की गतिमयता, जीवन के प्रति आस्था, मूल्यों का परीक्षण तथा विघटन, लोकजीवन की अनुभूतियाँ और सौन्दर्यबोध सभी का चित्रण नई कविता में देखा जा सकता है। छायावाद, प्रगतिवाद और प्रयोगवाद की तुलना में नई कविता का विषय अधिक व्यापक तथा विस्तृत है।

एल्डिंगटन ने जिस प्रकार की 'बेहद सख्त' कविता का जिक्र किया है,उसका उदाहरण हिंदी में शमशेर बहादुर सिंह की कविता अनायास प्रस्तुत करती है :

शिला का खून पीती थी वह जड़
जो कि पत्थर थी स्वयं।
सीढ़ियाँ थीं बादलों की झूलती टहनियों सी।
और वह पक्का चबूतरा ढ़ाल में चिकना
सुतल था आत्मा के कल्पतरु का?

विजयदेव नारायण साही के ध्यान में कदाचित ऐसी ही नई कविताएँ रही होंगी, जब उन्होंने छायावादी और उत्तर छायावादी कविताओं की संरचना से नई कविता की संरचना को अलगाते हुए कहा था : 'छायावादी कलाकृति मूलत: विस्फोट करता हुआ कलारूप है'जैसे केन्द्रीय अर्थ फूटकर चारों ओर क्रमश: विलीन होता हुआ बिखर रहा हो। तीसरे दशक की कलाकृति उसे एक लहर की तरह निर्मित करती है ,जिस प्रयास में महादेवी से लेकर बच्चन तक के गीत निर्मित होते हैं। नई कविता उस तरंग के रूप को एक 'स्ट्रक्चर' में बदल देती है। जैसे हीरे का क्रिस्टल हो।[2]

द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद की परिस्थितियों का असर भी नई कविता में देखने को मिलता है। लघु मानव की संकल्पना भी इसी की देन है। लघु मानव में औसत आम आदमी की पीड़ा देखने को मिलती है। लघु मानव ही नई कविता का नायक बनता है। नई कविता मानवतावादी है लेकिन मानवतावाद के मिथ्या आदर्श पर आधारित नहीं है। नई कविता में कुंठाओं और वर्जनाओं से मुक्ति भी देखने को मिलती है। नई कविता इन कुंठाओं और वर्जनाओं से बाहर निकलती है तथा नाजुक अनुभूतियों को यथार्थ से जोड़कर अभिव्यक्त करती है। इन कविताओं में भावना और बुद्धि का संश्लेषण भी देखने को मिलता है। इस कविता का नायक भोगे हुए यथार्थ की प्रतीति चाहता है,लेकिन अंतत: निरर्थकता बोध से ग्रसित हो जाता है। इनका आग्रह जितना वर्तमान से है उतना अतीत और भविष्य से नहीं। हर अनुभूति को विवेक की कसौटी पर कसकर देखता है। नई कविता में अनुभूति , अनुभूति की प्रामाणिकता तथा वास्तविकता पर बल है। नई कविता के कवियों के यहाँ प्रामाणिक अनुभूति और अनुभूति की प्रामाणिकता जैसे शब्दों का प्रयोग व्यवहृत होने लगा। वास्तव में अनुभूति की प्रामाणिकता ने ही कविता की नवीनता को स्थापित किया।

नई कविता के शास्त्र के साथ ही नई कविता की

नवीनता पर बल देना अनिवार्य हो गया और सद्य: सुलभ अनुभूति की प्रामाणिकता उस नवीनता की प्रतिष्ठा का अस्त्र बनी। आग्रह में कोई गड़बड़ी न थी, सिवा इस बात के कि प्रामाणिकता के लिए किसी वस्तुनिष्ठ प्रमाण की न तो आवश्यकता समझी गयी और न उसकी ओर कोई संकेत ही किया गया। प्रमाण स्पष्टत: स्वयं कविताएँ ही हो सकती हैं,किन्तु सैद्धांतिक स्तर पर प्रामाणिकता के प्रतिमान का निर्णय कैसे हो? यह प्रश्न सामने था। ऐसे ही समय मुक्तिबोध अपने बौद्धिक औजारों के साथ सामने आए और उन्होंने ईमानदारी से जुड़े हुए प्रश्नों की जटिलता उपस्थित की और कवियों और आलोचकों का ध्यान आकृष्ट किया। वसुधा में धारावाहिक रूप से प्रकाशित होनेवाली एक साहित्यिक डायरी में 'कलाकार की व्यक्तिगत ईमानदारी' पर दो किस्तें हैं, जो एक तरह से रघुवीर सहाय के ईमानदारी संबंधी विचार-सूत्रों को ही एक कदम और आगे ले जाती हैं। [3]

नई कविता का कवि आत्मविज्ञापन का घोर समर्थक है। नई कविता का कवि अपने चारों ओर प्रश्न ही प्रश्न अनुभव करता है, किन्तु इसका उत्तर उसके पास भी नहीं होता। नई कविता में निराशा के साथ-साथ आशा और विश्वास के स्वर भी सुनाई देते हैं। इस कविता में विसंगतियों,विषमताओं तथा विडंबनाओं का चित्रण व्यंग्यात्मक ढंग से किया गया है। नई कविता के क्षणवादी मानसिकता ने ही उसे भोगवाद की ओर धकेल दिया। यही कारण है कि इस कविता में भोगप्रस्तता तथा अनैतिकता के भी दर्शन होते हैं।

नई कविता' शब्द को व्यापक अर्थों में प्रयुक्त किया जाता है। इसमें कविता के साथ सम्पूर्ण युग की प्रवृतियाँ दृष्टिगोचर होती है। इस युग में रचनाकार ने सम्पूर्ण रचना युग को अभिव्यक्त करने के लिए कविता के साथ -साथ गद्य की अन्य विधाओं का भी उपयोग किया लेकिन इन सबके केंद्र में कविता ही रही। कविता ने मनुष्य और उसके समग्र अनुभवखंडों को पकड़ने की कोशिश की। 'नई कविता' शब्द अब एक व्यापकतर अर्थ में प्रयुक्त होता है,जिसमें कविता ही नहीं, वरन इस पूरे रचना-युग की प्रवृतियाँ भी व्यंजित होती हैं, जिन्हें समष्टि रूप में 'नवलेखन' भी कहा गया है। इन रचनाकारों की क्षमता किसी एक माध्यम में नहीं अँट सकी है। कविता,उपन्यास, नाटक, एक खास अर्थ में कहानी, गद्य-रूप, साहित्य-चिंतन इन सभी माध्यमों द्वारा अभिव्यक्ति की नयी तलाश जारी रही है। कविता इन सबके केंद्र में है तो इसलिए कि कविता की भाषा सबसे अधिक सर्जनात्मक होती है और इसी माने में कविता विद्या में सबसे अधिक साहित्य है। नई कविता में मनुष्य और उसके समग्र अनुभव को पकड़ने का यत्न हुआ है।[4]

नई कविता में लोक संपृक्ता का भाव भी देखा जा सकता है। सर्वेश्वर दयाल की कविताओं में लोकसंपृक्ता के इन भावों को देखा गया है। इसलिए यह कहना कि नई कविता का लगाव समाज से नहीं है, यह गलत होगा। "नयी कविता के ऊपर लगाया जाने वाला समाज-विमुखता का आरोप कितना निराधार है,यह ऐसी कविताओं के माध्यम से अच्छी तरह से समझा जा सकता है। लोक-संपृक्ति के इस मूल तत्व को ध्यान में रख कर कहना होगा कि सर्वेश्वर ने नयी कविता के लिए वह किया जो आधुनिक खड़ीबोली काव्य के आरंभिक युग में मैथिलीशरण गुप्त ने किया था। तद्भवता,सर्वजनीनता और व्यापकता उनके कृतत्व के मूल गुण हैं। नए कवि की इस भूमिका को उनकी इस कविता में स्पष्ट किया गया है।

मैं नया कवि हूँ-
इसी से जानता हूँ
सत्य की चोट बहुत गहरी होती है;
मैं नया कवि हूँ-
इसी से मानता हूँ
चश्मे के तले की दृष्टि बहरी होती है,
इसी से सच्ची चोटें बाँटता हूँ-
झूठी मुस्कानें नहीं बेचता।[5]

नई कविता के कवि अपने जीवनानुभूति को छोटी कविताओं में अभिव्यक्त करते हैं बावजूद इस युग में प्रबंध कविताएँ भी लिखी गयी हैं। धर्मवीर भरती का अंधायुग तथा कुँवर नारायण का 'आत्मजयी' इस युग की महत्वपूर्ण प्रबंध कविता है। नयी कविता की मूल प्रतिभा अपेक्षतया छोटी कविताओं में व्यक्त होते रहने पर भी कुछ रचनाएँ अपने प्रबंधपरक रूप में पूरी व्यवस्था तथा क्षमता के साथ ऊपर उभरती हैं। इनमें से धर्मवीर भारतीं का 'अंधा युग'(1955) तथा कुँवर नारायण का 'आत्मजयी'(1965) नयी कविता की महत्वपूर्ण उपलब्धियाँ हैं। 'अंधा युग' इस रचना- आंदोलन के आरंभिक दौर में लिखा गया एक युग काव्य है, जिसमें समकालीन जीवन के मूल्यगत विभ्रम को महाभारतकलीन कथा के बीच से अंकित किया गया है। नाटक और काव्य के तत्वों को समायोजित करके इस रचना में जीवन और संस्कृति के बुनियादी

प्रश्नों को उठाया गया है। आस्था सत्य, मर्यादा, नैतिकता जैसी परंपरित शब्दावली से जूझ कर कवि ने नये युग-बोध को विकसित करने का प्रयत्न किया है। प्रसाद और अज्ञेय की तरह जीवन में आस्था और सार्थकता की समस्या को भारती ने भी मनुष्य की सर्जन-क्षमता से जोड़ा है-'अंधा युग' के अंतिम अंश की पंक्तियाँ हैं-

पर एक तत्व है बीजरूप स्थित मन में
साहस में, स्वतंत्र में, नूतन सर्जन में[6]

नई कविता में समकालीन जीवन व्यवस्था की तीखी आलोचना देखने को मिलती है। तीखी शब्दावली का प्रयोग करके भी नई कविता का कवि शांत बने रहता है। "समकालीन जीवन-व्यवस्था की यह तीखी आलोचना धीरे -धीरे कवि में एक बड़बोलेपन को जन्म देती है, जो अगली पीढ़ी के रचनाकार में और प्रबल हो उठता है। आलोचना गहरी हो और आलोचना करने वाले का स्वयं अपना संतुलन बना रहे, यानी संक्षेप में कविता नारा न बनकर रह जाए। आज विरोधमूलक सभ्यता की यह सबसे बड़ी रचनात्मक आवश्यकता है। इन कवियों ने जहाँ यह सतर्कता बरती है वहाँ निष्पत्ति अधिक संतोषप्रद हुई है। 'उत्तराधिकार' शीर्षक कविता जो दूधनाथ ने श्री सुमित्रानंदन पंत के लिए लिखी है, कवि के परंपरा के साथ रचनात्मक रिश्ते की तलाश करती है। यहाँ सारी तीखी शब्दावली के बावजूद कवि की निरावेग मुद्रा बनी हुई है-

मैं इधर कई-एक वर्षों से मौन हूँ,
फिर-फिर वही एक सवाल-अंतत:
मैं तुम्हारा कौन हूँ?[7]

द्वन्द्व और तनाव आधुनिक भावबोध का प्रमुख तत्व है तथा यह आधुनिक जीवन शैली का अविछिन्न अंग भी है। नई कविता में द्वन्द्व और तनाव का कारण कहीं आत्मग्रस्तता है तो कहीं समाजग्रस्तता; कहीं अंतर्मुखता तो कहीं बहिर्मुखता। स्वातंत्रोत्तर भारत में मध्यवर्गीय बुद्धिजीवी अपनी सुविधाभोगी मनोवृति के कारण अपनी ऐतिहासिक भूमिका का निर्वहन नहीं करता है क्योंकि वह परिवर्तन से उत्पन्न होने वाले खतरे से बचना चाहता है। इस वजह से मध्यवर्ग विभाजित व्यक्तित्व को लेकर सामने आता है। इसकी अभिव्यक्ति नई कविता में हुई। मुक्तिबोध के शब्दों में-

जो है उससे बेहतर चाहिए
पूरी दुनिया को बदलने के लिए एक मेहतर चाहिए
जो मैं हो नहीं सकता।

नई कविता यदि आज द्वन्द्व और तनाव को काव्य के प्रतिमान के रूप में प्रतिष्ठित करना चाहती है तो उसे हिंदी आलोचना की गौरवशाली परंपरा को ही आगे बढ़ाना होगा रही है। ऐतिहासिक संदर्भ को देखते हुए भी कविता में आज द्वन्द्व और संघर्ष के मूल्य पर जोर देना अप्रासंगिक नहीं है। आज संघर्ष में घबराने वाले वही होंगे ,जो सत्ताधारी वर्ग के साथ यह सोचते हैं कि स्वाधीनता प्राप्ति के बाद जीवन में सारे संघर्षों का अंत हो गया। ऐसे लोग पदोन्नति के लिए अथवा सत्ता की रक्षा के लिए स्वयं चाहे जितना संघर्ष करें, किन्तु दूसरों के लिए संघर्ष को वर्जित मानते हैं-चाहे वह जीवन में हो या कविता में। इसी ऐतिहासिक संदर्भ में मुक्तिबोध का यह कथन अर्थपूर्ण हो जाता है कि काव्य या तो बाह्य जीवन-जगत के साथ सामंजस्य में है। उसके अनुकूल उपस्थिति होती है अथवा उसके साथ द्वन्द्व रूप में प्रस्तुत होता है अथवा काव्य-प्रवृत्ति एक स्तर या क्षेत्र में सामंजस्य और दूसरे स्तर या क्षेत्र में द्वन्द्व को लेकर प्रस्तुत होती है। आभ्यंतर या बाह्यीकरण, विश्वव्यापी सामंजस्य या द्वन्द्व अथवा दोनों के भिन्न रूप में उपस्थित होती है। आज की कविता में उक्त सामंजस्य से अधिक द्वन्द्व ही है। इसलिए उसके भीतर तनाव या घिराव का वातावरण है। (नई कविता का आत्म संघर्ष पृ.8)[8]

नई कविता का परिदृश्य ही बदला हुआ है। स्वतंत्रता संग्राम के बाद मध्यवर्ग की स्थिति दुविधाग्रस्त है। मुक्तिबोध ने अपनी लंबी कविता 'अंधेरे में' नए भावबोध तथा बदले हुए परिदृश्य का मार्मिक चित्रण किया है। स्वतंत्रता संघर्ष के समय मध्यवर्ग ने जो आदर्श प्रस्तुत किए वे आदर्श स्वतंत्रता पश्चात मध्यवर्ग की कमजोरियों का शिकार होता गया। आजादी पूर्व तथा आजादी बाद मध्यवर्ग की स्थितियों में परिवर्तन हुआ। आजादी पूर्व मध्यवर्ग की आदर्श आजादी बाद कुरूप यथार्थ में तब्दील हो गया। आजादी पूर्व मध्यवर्ग का साहस कायरता में, मध्यवर्ग का कर्मण्यता मध्यवर्ग की कर्महीनता में, मध्यवर्ग की समाजवाद में आस्था मध्यवर्ग की पूंजीवादी आस्था में,मध्यवर्ग की क्रांतिधर्मी चेतना मध्यवर्ग की यथास्थितिवाद में, मध्यवर्ग का त्याग मध्यवर्ग की सुविधजीविता में, मध्यवर्ग का साहस मध्यवर्ग की कायरता में तथा मध्यवर्ग की अभिव्यक्ति मध्यवर्ग की चुप्पी में तब्दील हो गया। यही कारण है कि 'अंधेरे में' कविता में मुक्तिबोध ने मध्यवर्ग से अभिव्यक्ति के खतरे उठाने का आह्वान किया।

अब अभिव्यक्ति के सारे खतरे उठाने ही होंगे।
तोड़ने ही होंगे मठ और गढ़ सब।

पहुँचना होगा दुर्गम पहाड़ों के उस पार
तब कहीं देखने को मिलेंगी बाँहें;
जिसमें कि प्रतिपल काँपता रहता
अरुण कमल, एक ले जाने पर उसको धंसना ही होगा
झील के हिम-सहित सुनील जल में[9] ।

नई कविता ने भाषा की सौन्दर्य वृद्धि के लिए नवीन प्रतीक,योजना, बिम्ब, विधान एवं उपमान योजना को अपनाया। नई कविता के कवियों ने छंद के बंधन को अस्वीकार करके छंद की मुक्त परंपरा में ही अपना विश्वास जताया। नई कविता के कवियों ने नए प्रतीक,नए उपमान तथा नए बिंबों का प्रयोग किया। इन कवियों ने वैज्ञानिक तथा पौराणिक यौन प्रतीकों का खुलकर प्रयोग किया। नई कविता ने पुरानी काव्य भाषा का त्याग कर बातचीत की सामान्य भाषा का उपयोग किया। नये कवियों ने अपनी भाषा को निजी प्रतीक व्यवस्था से समृद्ध किया है। नई कविता में बिम्ब का आग्रह इतना बढ़ा कि कथ्य भी उपेक्षित हो गया। धीरे-धीरे कविता बिम्ब के दायरे से निकलकर सपाटबयानी की ओर अग्रसर हो जाती है।

कविता में सपाटबयानी के इस आग्रह ने वस्तुत: गद्य-सुलभ जीवंत वाक्य-विन्यास को पुन: प्रतिष्ठित करने का प्रयास किया है, जिसके मार्ग में बिंबवादी रुझान निश्चित रूप से बाधक रहा है। नई कविता के उत्कर्ष काल में भी प्रवाह-पतित होने का खतरा उठाकर एक कवि धारा के विरुद्ध वाक्य -विन्यास की रक्षा के लिए आवाज बुलंद करता रहा, लेकिन उसकी आवाज न तब सुनी गई और न अब वह कवि है धरती और 'दिगंत' का रचनाकार त्रिलोचन, जिसके बारे में शमशेर ने लिखा है:

तुमने 'धरती' का पद्य पढ़ा है?
उसकी सहजता प्राण है।

त्रिलोचन की धरती की सहजता का आधार है अटूट वाक्य विन्यास, जिसके अनवरुद्ध प्रवाह को सॉनेट के कसे रूप से बांधते हुए उन्होंने ऐसी भाषा का प्रयोग किया है जिसकी ध्वनि में क्रिया भरी है और क्रिया में बल है। इस भाषा के आसग्रह के पीछे वह दृष्टि है जिसके कारण सातवें दशक के कवि आज सपाटबयानी पर उतरने के लिए विवश है।

गला सत्य का कभी नहीं घोंटूँगा, मेवा से
वरंब्रूहि न कहूँगा और न चुप रहने का,
लड़ता हुआ समाज, नई आशा-अभिलाषा
नए चित्र के साथ नई देता हूँ भाषा"[10]

1959-60 ऐतिहासिक दृष्टि से नई कविता के चरम विकास का काल था जहाँ दो प्रकार की प्रवृत्तियाँ विद्यमान थीं। एक प्रवृति बिम्बात्मकता को प्रश्रय देती थी तो दूसरी प्रवृति सपाटबयानी की ओर अग्रसर थी।"बिम्ब के मोह के टूटने का कारण सामाजिक और ऐतिहासिक है। छठे दशक के अंत और सातवें दशक के आरंभ में सामाजिक स्थिति इतनी विषम हो चुकी थी कि उसकी चुनौती के सामने बिम्बविधान कविता के लिए अनावश्यक भार प्रतीत होने लगा जिस प्रकार सन 36 तक आलेख्र आते स्वयं छायावादी कवियों को भी सुंदर शब्दों और चित्रों से लदी हुई कविता नि:सार लगने लगी, उसी प्रकार सन 60 के आस-पास नई कविता की बिम्बध र्मिता की निरर्थकता का अहसास होने लगा। समस्या परिस्थितियों के सीधे साक्षात्कार की थी; प्रश्न हर चीज को उसके सही नाम से पुकारने का था; क्योंकि जैसा कि केदारनाथ सिंह ने कहा है:

चीजें एक ऐसे दौर से गुजर रही हैं
कि सामने की मेज को सीधे मेज कहना

उसे वहाँ से उठाकर अज्ञात अपराधियों के बीच रख देना है।

इस मुश्किल ने क्रमश: उस प्रवृति को जन्म दिया जिसे अशोक वाजपेयी ने श्रीकांत वर्मा के दो नए काव्य -संग्रह माया दर्पण और दिनारंभ की समीक्षा (धर्मयुग , 23 जून, 68) करते हुए सपाटबयानी कहा है। [11]

नई कविता की भाषा युग-संदर्भों से जुड़ती है तथा अर्थ प्रक्रिया में स्वायत्त होकर स्वत: सर्जनात्मक भी हो जाती है। जनता और अखबार को जोड़ने वाला मुख्य तत्व साधारण बोलचाल की भाषा है । सामान्य मामूली जीवन की पहचान, बोलचाल तथा अखबारी भाषा को सर्जनात्मक भाषा बना लेना नए कवियों को भली भाँति आता है।

"रचनात्मक स्तर पर बिम्ब विधान के कुछ नये रूप यों रघुवीर सहाय की कविताओं में विकसित हुए हैं । अपनी भाषा के रचाव में उन्होंने वर्णन और बिम्ब के भेद को क्रमश: मिटाया है । कविता की भाषा को सही अर्थ में बोलचाल और अखबार की भाषा से संबद्ध करने में वर्णन और बिम्ब का अंतर डूब जाए , यह स्वाभाविक है । इस प्रक्रिया में सामान्य भाषा की रचनात्मक क्षमता का बिल्कुल नया और प्रीतिकर अहसास कवि के प्रथम महत्वपूर्ण संकलन 'आत्महत्या

के विरुद्ध' की कविताओं में होता है ; वे कविताएँ चाहे राजनीति के अनुभव ख़ क्षेत्र से संबद्ध हों या कि प्रेम के अनुभव-क्षेत्र से,अथवा प्रकृति के मानवीय चित्र हों। रघुवीर सहाय की कविताओं में वर्णन -बिम्ब का अभेद कैसे संभव होता है, यह समझने के लिए कुछ उदाहरण प्रस्तुत हैं

सिंहासन ऊँचा है सभाध्यक्ष छोटा है
अगणित पिताओं के
एक परिवार के
मुँह बाये बैठें हैं लड़के सरकार के
लूले काने बहरे विविध प्रकार के
हल्की सी दुर्गंध से भर गया है सभाकक्ष।
('मेरा प्रतिनिधि')

एक गरीबी, ऊबी, पीली, रोशन, बीबी
रोशनी, धुंध, जल, यमन, हरमुनियम अदृश्य
डब्बाबंद शोर
गाती गला भींच आकाशवाणी
अंत में तड़ंग। ('आत्महत्या के विरुद्ध')[12]

नई कविता में अव्यय का प्रयोग भी देखा जा सकता है । शमशेर का समूचा काव्य जैसे हिंदी कविता के पद समूह में अव्यय हो-सरल, निरीह और अर्थवान, पर अपनी प्रक्रिया में जटिल ।[13] रघुवीर सहाय की कविता में सपाटबयानी के साथ-साथ पत्रकारिता का असर देखा जा सकता है। "रघुवीरसहाय के यहाँ कविता की रचना-प्रक्रिया में उनकी पत्रकारिता का अनुभव विशेष उपयोगी सिद्ध हुआ है, भाषा और संवेदना दोनों स्तर पर।[14] मुक्तिबोध की कविता में बिंबों के बीच की अन्तरक्रिया को स्पष्ट देखा जा सकता है। .. तभी उनकी कुछ लंबी कविताएँ कई स्तरों पर बढ़िया संघटित हुई है, जिसमें शीर्षस्थ है 'अंधेरे में', 'चाँद का मुंह टेढ़ा है' और 'ब्रह्मराक्षस'। इनमें कई-कई बिंब परस्पर अन्तरक्रिया करते हुए पूरी कविता में अंतर्व्याप्त हो जाते हैं।[15]

निष्कर्ष:

नई कविता नवीन जीवन मूल्य, नया युग सत्य, नवीन काव्य चेतना, नवीन युग बोध तथा आधुनिक नवीन भावबोध की कविता है। मानव मूल्यों के संरक्षण तथा सामाजिक नव निर्माण की कविता है। निरर्थकता बोध, अकेलापन, पहचान का संकट, तनाव,अंतर्द्वंद्व, टूटन, लघुमानव की प्रतिष्ठा, क्षणवाद, मानवीय संबंधों का विघटन, अनुभूति की प्रामाणिकता, कथ्य की विविधता तथा नए शिल्प विधान नई कविता की महत्वपूर्ण विशेषता है। मुक्तिबोध के अनुसार यह वैविध्य जीवन के आत्मचेतस व्यक्ति की प्रतिक्रिया है। यह कविता सम्पूर्ण जीवन (ट्रैजडी तथा कॉमेडी) को अभिव्यक्त करती है। जीवन के टुकड़ों में अंतरर्निहित सुख-दुख, राग-विराग, उजाला-अंधेरा, आशा -निराशा उत्कर्ष-अपकर्ष, द्वन्द्व, संक्रांति, क्राइसिस इत्यादि सभी को अभव्यक्त करती है। यह कविता जीवन के हर छोटी घटना के भीतर से सम्पूर्ण जीवन की सार्थकता का अनुभव कराती है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :

1. रामस्वरूप चतुर्वेदी, हिंदी साहित्य और संवेदना का विकास, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण:1986, पृष्ठ 234-235
2. नामवर सिंह, कविता के नए प्रतिमान, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, चौथा संस्करण:1990, पृष्ठ 139-140
3. वही, पृष्ठ 188
4. रामस्वरूप चतुर्वेदी, हिंदी साहित्य और संवेदना का विकास, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण:1986, पृष्ठ 234
5. वही, पृष्ठ 237
6. वही, पृष्ठ 240
7. वही, पृष्ठ 246
8. नामवर सिंह, कविता के नए प्रतिमान, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, चौथा संस्करण:1990, पृष्ठ 180-181
9. सं. निर्मला जैन, अंतस्तल का पूरा विप्लव: अंधेरे में, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली, पहला संस्करण: 1994, पृष्ठ 145
10. नामवर सिंह, कविता के नए प्रतिमान, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, चौथा संस्करण:1990, पृष्ठ 127
11. वही, पृष्ठ 125-126
12. रामस्वरुप चतुर्वेदी, हिंदी काव्य का इतिहास, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, संस्करण: 2012, पृष्ठ 192-193
13. वही, पृष्ठ 288
14. वही, पृष्ठ 296
15. वही, पृष्ठ 270